Dr. Bibhuti Bhushan

Lecture - 7 II

राष्ट्रकूटों की सांस्कृतिक उपलब्धियाँ

आठवीं शताब्दी के दक्षिण भारतीय राज्यों में राष्ट्रकूटों की काफी बड़ी भूमिका रही है। उन्होंने करीब दो सौ वर्षों तक दक्षिण की राजनीति को प्रभावित किया। 18वीं सदी में मराठों के उदय के पूर्व राष्ट्रकूटों के समान अन्य किसी शक्तिशाली राजवंश का उदय नहीं हुआ। राष्ट्रकूटों का उत्थान वातापी के चालुक्य राज्य के अवशेषों पर हुआ और उनका अंत भी चालुक्यों की एक शाखा कल्याणी के चालुक्यों द्वारा हुआ। लगभग दो शताब्दियों की शासन अवधि में राष्ट्रकूटों ने एक विशाल राज्य की स्थापना के अतिरिक्त वहाँ प्रशासनिक एवं सांस्कृतिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

(2) राष्ट्रकूट मेलों में प्रशासन का महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है। राजा शासन का वास्तविक प्रधान होता था और राज्य की सारी शक्तियाँ उसी के हाथों में केन्द्रित थीं वह राजवंश के सदस्यों, विभागीय मंत्रियों, और पदाधिकारियों की सहायता से शासन चलाता था। साम्राज्य के अंतर्गत दो प्रकार की प्रशासनिक इकाइयाँ थी केन्द्रशासित क्षेत्रों पर राजा स्वयं पदाधिकारियों की सहायता से शासन करता था। कुछ क्षेत्रों का प्रशासन अधीनस्थ सामंतों को सौंप दिया गया था। राजा का प्रतिनिधि इन सामंतों पर नियंत्रण रखता था। केन्द्रशासित क्षेत्र राष्ट्र, विषय, भुक्ति और ग्रामों में विभक्त थे इन प्रशासनिक इकाइयों के प्रधान क्रमशः राष्ट्रपति, विषयपति और भोगपति होते थे। इनका मुख्य कार्य शांति व्यवस्था बनाए रखना और राजस्व-वसूली का कार्य देखना था। ग्रामपति ग्राम सभाओं और उपसमितियों की सहायता से यह कार्य ग्रामों में करता था। राष्ट्रकूटों ने विशाल और सुसंगठित स्थायी सेना की सहायता से एक शक्तिशाली राज्य की स्थापना की थी सामंतों की सेना आवश्यकतानुसार राजा की सहायता करती थी राष्ट्रकूटों की एक बड़ी सेना इतनी मात्रा में ही नियुक्त थी। राज्य की आमदनी का मुख्य साधन भूमिकर, नजराना, वन, खान एवं युद्ध में लूटी धनराशि थी। यह धन राजकीय मदों के अतिरिक्त विद्वानों एवं धार्मिक संस्थाओं को दान देने एवं जन कल्याणकारी कार्यों में खर्च किया जाता था।

राष्ट्रकूट समाज वर्णव्यवस्था के अनुकूल चार प्रमुख वर्गों में विभक्त था। क्षत्रियों में राजवंश की विशेष स्थिति और प्रतिष्ठा थी। और सामान्य क्षत्रियों का दर्जा ब्राह्मणों से हीन था परंतु राजवंश के सदस्यों को ब्राह्मणों से उच्च माना जाता था। ब्राह्मणों को अनेक सुविधाएँ प्राप्त थीं। ब्राह्मण सामान्य जन की तुलना में आधी राशि ही कर के रूप में देते थे निर्धन और विद्वान ब्राह्मणों को करमुक्त रखा जाता था यद्यपि ब्राह्मणों का ... ही जाती थी तथापि ब्राह्मणों को सरकारी नौकरियाँ दी ही जाती थीं वैश्यों की स्थिति में गिरावट आ रही थी लेकिन

Scanned with CamScanner

शूद्रों की स्थिति में सुधार हुआ वे कुछ धार्मिक अनुष्ठान करते थे तथा सेना में भर्ती हो सकते थे। अस्पृश्यता की भावना भी समाज में प्रचलित थी। बाल विवाह का प्रचलन समाज में ~~प्रचलन~~ था परन्तु सतीप्रथा एवं विधवा विवाह का प्रचलन नहीं था। विधवाओं को संपत्ति में अधिकार प्राप्त था।

राष्ट्रकूटों के समय में जैन, बौद्ध एवं ब्राह्मण तीनों ही धर्म लोकप्रिय थे लेकिन बौद्धधर्म की अवनति हो रही थी समाज में इसका ज्यादा प्रभाव नहीं था। बौद्धधर्म की अपेक्षा जैनधर्म ज्यादा प्रभावशाली था। अनेक राष्ट्रकूट राजाओं जैसे अमोघवर्ष ने जैनधर्म को संरक्षण प्रदान किया परन्तु यह धर्म ब्राह्मण धर्म का मुख्य प्रतिद्वंद्वी बन गया। ब्राह्मणधर्म के अंतर्गत विष्णु, शिव, शक्ति, ~~आदित्य और पांडुरंग की~~ आदि पूजा की जाती थी धार्मिक अनुष्ठानों के प्रति लोगों की आसक्ति एवं श्रद्धा थी। विभिन्न धार्मिक संस्थाओं के अस्तित्व के बावजूद सामाजिक वातावरण धार्मिक कट्टरपन और संकीर्णता से दूर था। राष्ट्रकूटों के समय दक्षिण में इस्लाम धर्म का प्रसार हुआ। राष्ट्रकूटों ने अपने राज्य में अरबों को बसने तथा मस्जिद बनवाने की सुविधा प्रदान की। इससे भारतीयों और अरबों में सांस्कृतिक संपर्क का विकास हुआ।

राष्ट्रकूट शासक स्वयं विद्वान एवं विद्यानुरागी थे। राज्य के अतिरिक्त धनी व्यक्ति एवं व्यापारिक निगमों के अध्यक्ष भी विद्यार्थियों को सहायता प्रदान करते थे। कन्हेरी के बौद्ध विहार में विद्यार्थियों की पुस्तकों के लिए श्रेष्ठिन मधुविष्णु ने प्रचुर धन दान दिया था। सलोत्गी लेख में एक विद्यालय का उल्लेख मिलता है जिसमें 27 छात्रावास थे। बौद्ध विहारों एवं जैन मठों में बहुसंख्यक विद्यालय चलाए जाते थे। साम्राज्य के सभी क्षेत्रों में स्थापित अग्रहार ग्रामों तथा उनमें स्थापित विद्यालयों का उल्लेख मिलता है। इन ग्रामों में बसाए गए ब्राह्मणों का मुख्यकार्य पाठशालाओं का संचालन तथा शिक्षा व्यवस्था की देखरेख करना था। संस्कृत की उच्च शिक्षा का प्रबंध अग्रहार ब्राह्मणों के अधीन रखा गया था। संस्कृत शिक्षा के प्रचार-प्रसार हेतु अग्रहार ग्रामों की स्थापना एवं उनकी आर्थिक व्यवस्था का प्रबंध राजा स्वयं देखता था। गोविंद IV ने ऐसे 400 ग्रामों को स्वयं बसाया था। अग्रहार ग्रामों के अतिरिक्त गाँवों में अध्ययन हेतु पाठशालाएँ स्थापित की गई थी। अग्रहार ग्रामों में स्थापित विद्यालयों में पाठ्यक्रम नि:शुल्क था। मंदिर, मठ, विहार तथा तीर्थस्थल आदि भी शिक्षा एवं विद्यालयों के केन्द्र थे। व्याकरण, तर्कशास्त्र, अथर्वविद्या, आयुर्वेद, वैदिक धर्म एवं दर्शन का अध्ययन कराया जाता था। संस्कृत व्याकरण एवं साहित्य की उच्चशिक्षा दी जाती थी लेकिन वैश्यों एवं शूद्रों को वैदिक शिक्षा नहीं दी जाती थी। वैश्यों को मात्र व्यावसायिक शिक्षा का अधिकार था।

राष्ट्रकूट नरेशों के राजदरबार में संस्कृत के विद्वानों एवं कवियों को विशेष आदर प्राप्त था। उनके राज्याश्रय में इस भाषा के संवर्धन पर विशेष ध्यान दिया गया तथा इसके साहित्यिक उत्कर्ष तथा कवियों को संरक्षण प्राप्त हुआ। इस काल की संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण प्रशस्तियों एवं ताम्र पत्रों से पता चलता है कि इनके लेखकों या कवियों को उच्चकोटि का साहित्यिक ज्ञान प्राप्त था। राष्ट्रकूट शासक अमोघवर्ष स्वयं महान कवि एवं उच्चकोटि का विद्वान था। उसने कन्नड़ भाषा में सुप्रसिद्ध 'कविराजमार्ग' नामक ग्रंथ की रचना की थी यह ग्रंथ दण्डिन कृत 'काव्यादर्श' से अनुप्राणित प्रतीत होती है। इस नरेश के गुरु आचार्य जिनसेन ने आदिपुराण, हरिवंश तथा 'पार्श्वाभ्युदय' नामक ग्रंथों की रचना की। अमोघवर्ष के ही शासनकाल में शाकटायन ने 'अमोघवृत्ति' की रचना की थी इस शासक के महान गणितज्ञ वीराचार्य ने गणितसार संग्रह की रचना की। इन्द्र III के शासनकाल में त्रिविक्रम ने नलचंपू की रचना की। कृष्ण III के राज्याश्रय में हलायुध ने 'कवि रहस्य' नामक ग्रंथ की रचना की। राष्ट्रकूटों के शासनकाल में लल्लण, कुमारिल, वाचस्पति, कालायन, अंगिरस एवं यम आदि स्मृतिकारों एवं भाष्यकारों का आविर्भाव हुआ। अकलंक और विद्यानंद ने जैनग्रंथ आप्तमीमांसा पर अष्टशती एवं अष्टसाहस्री नामक टीकाएँ लिखी। इस काल में प्रभाचंद्र ने न्यायकुमुदचंद्रोदय तथा माणिक्यनंदिन ने परीक्षामुखशास्त्र की रचना की। 9वीं सदी में सोमदेव ने यशस्तिलकचंपू नामक ग्रंथ की रचना की थी। उनका नीतिवाक्यामृत तत्कालीन राजनीतिक सिद्धांतों का मानक ग्रंथ माना जाता है।

10वीं सदी में महाकवि पम्प ने कन्नड़ भाषा में आदिपुराण तथा विक्रमार्जुनविजय नामक ग्रंथों की रचना की। गंगवाड़ी राज्य के प्रसिद्ध सेनापति चामुण्डराय ने

~~का समकालीन प्रमाण~~ केवल एलोरा में ही देखने को मिलता है। एलोरा में गुफा निर्माण के साथ ही मूर्ति शिल्प की भी अनुपम कला ~~अद्भुत~~ भारतीय स्थापत्य की ~~अद्भुत~~ देन है।

राष्ट्रकूटों के शासनकाल में एलोरा की गुफा की तरह एलीफैंटा की पहाड़ी में चट्टानों को काटकर उमा-महेश्वर गुफा मंदिर का निर्माण करवाया गया। इस मंदिर के गर्भगृह में शिव की त्रिमूर्ति निर्मित है। एलीफैंटा के मंदिर के गर्भगृह में ~~वर्णित~~ एवं स्थापित शिव का अलंकरण मूर्तिकला की अंतिम परिणति प्रदर्शित होती है। मंदिर में एक ओर उमा-महेश्वर की युगल-मूर्ति निर्मित की गई है वहीं दूसरी ओर एक विशाल भव्य शिव की ताण्डव नृत्यरत प्रतिमा स्थापित है। मंदिर के दूसरे तल के अंदर के छत पर किया गया चित्रांकन इस गुफा मंदिर के सम्पूर्ण कला सौंदर्य में चार चाँद लगाता है। इस प्रकार राष्ट्रकूट काल के बने गुहा मंदिरों का वास्तु स्थापत्य, एवं चित्रकलाओं से उस युग की कला की उत्कृष्टतम झाँकी देखने को मिलती है। =

राष्ट्रकूटों की प्रसिद्ध सांस्कृतिक थाती का इतिहास एलोरा की गुफाओं में सुरक्षित है। ठोस पर्वत चट्टानों पर उभारी गई एलोरा की ये गुफाएँ न केवल समस्त भारत में अपितु विश्व के कला निर्माण के इतिहास में अपना अनन्य स्थान रखती है।

एलोरा की इन गुफाओं की संख्या छत्तीस है जो कि जैन, बौद्ध और ब्राह्मणधर्म के समन्वय का प्रतीक है। यहाँ तीनो धर्मों के उच्चतम आदर्शों का संगम हुआ है। प्रथम विहार गुफा बौद्ध भिक्षुओं के रहने के लिए बनायी गई थी। दूसरी गुफा में बोधिसत्वों से समलंकृत बुद्ध की सुंदर प्रतिमा है। उसके बाद एलोरा की प्रसिद्ध विश्वकर्मा गुफा है उसमें बुद्ध की विशाल एवं भव्य प्रतिमा बनायी गई है। अन्य दर्शनीय गुफाओं में रावण की खाई, दशावतार, सीता की नहानी, छोटा कैलाश, इन्द्रसभा, जगन्नाथ सभा और कैलाश मंदिर का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। लगभग दो सौ पचहत्तर फुट लंबी कैलाश मंदिर एक आश्चर्यजनक उपलब्धि है। उसमें वराह, नरसिंह, लक्ष्मी, विष्णु और शिव की भव्य प्रतिमाएँ स्थापित हैं। यह मंदिर कैलाश पर्वत की शकल पर है और उसमें नदी की धारा इस कौशल से घुमा-कर लायी गयी है कि उसकी पानी शिवमूर्ति के ऊपर टपकता रहता है। कैलाश मंदिर में अधिष्ठित नटराज की अष्टभुजायुक्त मूर्ति विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

एलोरा की मूर्तियों में दैत्य, दानव, शिव, भैरव नृसिंह, हिरण्यकशिपु, रावण, महिषासुर और काली की विशाल मूर्तियाँ निर्मित की गई हैं। इन मूर्तियों में दैवी शक्ति के समक्ष आसुरी(राक्षस) शक्ति के पराजय की अतीत कालीन पौराणिक कथाओं को वर्तमान संदर्भ में प्रस्तुत किया गया है। इन विरोधी शक्तियों को इतनी कुशलता एवं निपुणता के साथ ~~कर्मिष्ट करने~~ दर्शाने का प्रयास

चामुण्डरायपुराण लिखा जिसे गद्य साहित्य का एक उत्कृष्ट ग्रंथ माना जाता है। इसी प्रकार महाकवि रन्न ने गदायुद्ध और अजितपुराण जैसे श्रेष्ठ कन्नड़ ग्रंथों की रचना की। श्रवणबेलगोला के 982 ई. के एक रायचूर लेख में कुछ मराठी शब्दों का प्रयोग किया गया है जिससे पता चलता है कि मराठी भाषा का जन्म हो गया था। इस प्रकार राष्ट्रकूट नरेशों का शासनकाल संस्कृत और कन्नड़ साहित्य हेतु उन्नयन का काल था और दोनों भाषाओं ने ज्ञान-विज्ञान की संपूर्ण शाखा को प्रोत्साहित किया।